International Journal of Home Science 2019; 5(3): 209-211

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 209-211
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 17-07-2019
Accepted: 21-08-2019

डॉ0 सरिता वर्मा
शोध छात्रा, विभागाध्यक्ष, हिमालयन विश्वविद्यालय, गृह विज्ञान, महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

जया शुक्ला
शोध छात्रा, विभागाध्यक्ष, हिमालयन विश्वविद्यालय, गृह विज्ञान, महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 सरिता वर्मा
शोध छात्रा, विभागाध्यक्ष, हिमालयन विश्वविद्यालय, गृह विज्ञान, महिला महाविद्यालय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

किशोर एवं किशोरियों के सम्पूर्ण विकास पर पड़ने वाले संचार माध्यमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 सरिता वर्मा एवं जया शुक्ला

प्रस्तावना

आधुनिक युग में आज किशोरावस्था के अन्तर्गत भौतिक परिपक्वता के साथ–साथ मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से किशोरावस्था को दो अवस्थाओं में बांटा गया हैं– (1) पूर्व किशोरावस्था– यह अवस्था तेरह–चौदह वर्ष से लेकर सोलह या सत्रह वर्ष तक की हैं। किशोरियों में यह अवस्था तेरह वर्ष की आयु से प्रारम्भ होती हैं तथा किशोरों में लगभग एक वर्ष बाद प्रारम्भ होती हैं। किशोरों में प्रायः चौदह वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ होती हैं। (2) उत्तर–किशोरावस्था – यह सोलह या सत्रह वर्ष से इक्कीस वर्ष तक की अवस्था हैं।

वैयक्तिक भिन्नताओं के कारण कुछ किशोर–किशोरियों में किशोरावस्था से सम्बन्धित लक्षण शीघ्र और अधिक स्पष्ट ढंग से प्रकट होने लगते हैं तथा कुछ में इन लक्षणों की उत्पत्ति और विकास कुछ देर से प्रारम्भ होता हैं। किशोरावस्था ही वह अवस्था हैं जो किशोर को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक आदि दृष्टि से प्रौढ़ बनाती हैं। इस अवस्था में व्यक्ति की जो जीवन–शैली बन जाती हैं वही जीवन–शैली थोड़े–बहुत परिवर्तन के साथ जीवन–पर्यन्त चलती रहती हैं। बाल्यावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में किशोरों में एक विशिष्ट नयापन दिखाई देता हैं। यह नयापन मूलतः उनकी यौन–परिपक्वता के कारण ही होता हैं। सभी विकासात्मक अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक आनन्दमयी होती हैं। इसीलिए इस अवस्था को सुनहेरी अवस्था कहा गया है। मनुष्य में बाल्यावस्था से ही संचार प्रक्रिया का विकास शुरू हो जाता हैं। शिशु के संचार व्यवहार के विकास हेतु प्रेरणा एवं पर्यावरण आधारभूत तत्व हैं।

मानव की जिज्ञासा का परिणाम हैं, कि आज का संसार हर समय संचार के माध्यम से कुछ न कुछ पाने के लिए लगा रहता हैं। आज जब संसार संचार के कारण सिमट कर नजदीक आ जाने की बात की जाती हैं, तो इसके पीछे संचार क्रान्ति की बड़ी भूमिका है। संचार को मानव जीवन का आवश्यक पहलू माना जाता है। एक ऐसा जीवन जिसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। संचार माध्यम मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। संचार के बिना मानव जीवन की सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

इस दौर में किसी भी परिवार की सबसे बड़ी चिन्ता अपने किशोरों को सही दिशा व सही शिक्षा दिलाने और फिर उन्हें अच्छे रोजगार में व्यवस्थित करने की होती हैं। एक ओर बहुस्तरीय, सामाजिक विषमता और दूसरी ओर शिक्षा तथा रोजगार के सम्बन्ध में साफ–सुथरी स्पष्ट सर्वव्यापी व समाजनीति होने के कारण रोजगार के क्षेत्र में लगभग अराजकता की स्थिति दिखायी देती हैं। हमारी सरकार जो अभी तक सभी किशोरों के लिये प्राथमिक शिक्षा तक सुनिश्चित नहीं कर पाई हैं। इससे भी गम्भीर बात यह हैं कि वर्तमान में जिन–जिन क्षेत्रों में, जिस–जिस प्रकार के रोजगार उपलब्ध हैं, उनकी जानकारी भी किसी सुनिश्चित प्रक्रिया के तहत जरूरतमंदों तक नहीं पहुँच पाती है। जबकि इस जानकारी का होना जितना युवाओं के लिए जरूरी है उतना ही शिक्षारत किशोरों के लिए भी।

अखबारों के ऐसे पृष्ठों जिन पर कैरियर से सम्बंधित जानकारी को कलात्मक ढंग से प्रकाशित किया जाता हैं, वैसी प्रक्रिया को कैरियर पत्रकारिता कहा जाता हैं, फिल्म पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, साहित्य पत्रकारिता की तरह कैरियर पत्रकारिता भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं। लेकिन किशोरों के लिये प्रिंट मीडिया में कैरियर से जुड़े पृष्ठ महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। अब किशोरों की संख्या किसी आर्थिक फिल्म एवं साहित्य पृष्ठ के पाठकों से कम नहीं आंकी जा सकती है। किशोरों, युवा, वरिष्ठ संचार के अच्छे पृष्ठ की चाहत में लगे रहते हैं। माता–पिता अपने किशोरों के लिए अच्छे संचार के साधन को तलाशने व सलाह देने में लगे रहते हैं।

संचार माध्यम :–

आज मानव संचार का इतिहास अत्यन्त पुराना हैं, किन्तु संचार माध्यमों के इतिहास में बीसवीं शताब्दी में उल्लेखनीय प्रगति हुई हैं। सदियों तक विभिन्न लोक माध्यम जैसे – लोक गीत, लोक नाटक, लोक नृत्य, कठपुतली का खेल भांड, लावणी बाउल इत्यादि संचार माध्यम रहे हैं। लेकिन आज तकनीकी विकास के फलस्वरूप संचारक के पास अनेक माध्यम हैं, जैसे – रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र–पत्रिकायें, चित्रकला, फिल्म, पोस्टर, नाट्य मंच, पोस्टर बैनर इत्यादि। अपनी बात संचारित करने के लिये संचारक को इनमें से किसी माध्यम का चयन करना होता हैं।

आकृति 1: इन्टरनेट माध्यम

टी0वी0 माध्यम

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कहा है कि ''हम दूरदर्शन का विस्तार न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में वरन् विकास के लिये शिक्षा साधन के रूप में वरन् विकास के लिये शिक्षा के साधन के रूप में करना चाहते हैं।''

आकृति 2: टी0 वी0 माध्यम

प्रिण्ट माध्यम, अखबार

''समाचार पत्र का पहला कर्तव्य यह है कि वह सुन्दर दिखे। दूसरा यह है कि सच बोले तथा जनता, बच्चों को सन्तुष्ट करे व उनके जीवन के लिये उपयोगी समाचार की व्यवस्था बनाये रखे। अखबार ऐसा होना चाहिये जो जनसमुदाय को पड़ने व देखने में अच्छा लगे।''

ई–मेल

कम्प्यूटर के माध्यम से संदेशों को भेजने तथा प्राप्त करने की प्रक्रिया ई–मेल या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहते हैं।

आकृति 3: ई–मेल

तालिका 1: टी0वी0 देखने के समय के आधार पर

क्र0 सं0	पसन्द	किशोर		किशोरी		पूर्ण प्रतिशत	पूर्ण प्रतिदर्श
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत		
1.	सुबह	00	00	00	00	00	00
2.	दोपहर	30	10	30	10	20	60
3.	शाम	45	15	45	15	30	90
4.	रात	60	20	60	20	40	120
5.	कभी नहीं	15	5	15	5	10	30
योग		150	50	150	50	100	300

स्पष्ट होता हैं कि 40 प्रतिशत किशोर/किशोरी रात में टेलीविजन देखना पसन्द करते हैं तथा सुबह के समय 0 प्रतिशत किशोर/किशोरी टेलीविजन देखना पसन्द नहीं करते। 10 प्रतिशत किशोर/किशोरी ऐसे भी हैं जो किसी भी वक्त टेलीविजन नहीं देखते 20 प्रतिशत किशोर/किशोरी दोपहर तथा 30 प्रतिशत किशोर/किशोरी शाम को टेलीविजन देखते हैं।

तालिका 2: समाचार पत्र आने के आधार पर

क्र0 सं0		किशोर		किशोरी		पूर्ण प्रतिशत	पूर्ण प्रतिदर्श
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत		
1.	दैनिक	90	30	90	30	60	180
2.	साप्ताहिक	30	10	30	10	20	60
3.	पाक्षिक	5	1.67	5	1.67	3.33	10
4.	मासिक	25	8.33	25	8.33	16.67	50
योग		150	50	150	50	100	300

तालिका से स्पष्ट हैं कि 60 प्रतिशत किशोर/किशोरी के घर दैनिक समाचार, पत्र–पत्रिका आते हैं। सबसे कम 3 प्रतिशत किशोर/किशोरी हैं जिनके घर मासिक तथा 20 प्रतिशत किशोर/किशोरी के घर साप्ताहिक एवं 17 प्रतिशत किशोर/किशोरी के घर मासिक पत्र–पत्रिका आते हैं।

तालिका 3: कम्प्यूटर का बच्चों पर प्रभाव के आधार पर

क्र0 सं0		किशोर		किशोरी		पूर्ण प्रतिशत	पूर्ण प्रतिदर्श
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत		
1.	अच्छा	40	26.67	40	26.67	26.67	80
2.	खराब	4	3.33	4	3.33	3-33	8
3.	बहुत अच्छा	10	6.67	10	6.67	6.67	20
4.	बहुत खराब	95	63.63	95	63.33	63.33	190
योग		150	50	150	50	100	300

सबसे अधिक 50 प्रतिशत किशोर/किशोरी मानते हैं कि कम्प्यूटर का किशोर/किशोरी पर अच्छा प्रभाव पड़ता हैं, 40 प्रतिशत किशोर/किशोरी के अनुसार बहुत अच्छा, 10 प्रतिशत किशोर/किशोरी का मत है कि कम्प्यूटर का बुरा प्रभाव पड़ता हैं।

तालिका 4: इन्टरनेट की सुविधा के आधार पर

क्र0 सं0		किशोर		किशोरी		पूर्ण प्रतिशत	पूर्ण प्रतिदर्श
		आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत		
1.	हाँ	150	50	150	50	100	300
2.	नहीं	00	00	00	00	00	00
योग		150	50	150	50	100	300

तालिका से स्पष्ट हैं कि समस्त 100 प्रतिशत किशोर/किशोरी इस बात से सहमत हैं कि घर में इंटरनेट की सुविधा होनी चाहिए।

सन्दर्भ

1. हरपालिनी बी0डी0 संचार साधन, प्रसार शिक्षा पृ0सं0 195–196
2. गीता पुष्प शाँ ग्रामीण महिलाओं एवं प्र0 विनोद पुस्तक बच्चों के निमित्त मन्दिर, आगरा (2) कल्याणकारी कार्यक्रम प्रसार शिक्षण
3. मित्तत, आर0के0 शिक्षा एवं संचार आर्टिकिल डॉ0 सुधा पाण्डेय मानव विकास
4. डॉ0 आराधना सिंह जन संचार माध्यम पृ0सं0 22–30
5. रूप चन्द्र गौतम कैरियर पत्रकारिता ISBN-81-7312-053-6
6. डॉ0 अनिल राय संचार परिधि एवं विस्तार
7. Narayanan A. The Impact of Television on Indian Families, Unpublished Ph.D. Thesis, University of Bombay, 1983.
8. Packard V. T.V. can be Mazardous to Children Reader's Digiest, 1988, 133.
9. Rai GL. Extension Communication and Management IIIrd Edition, 114.
10. Reddy UV. A study of the factors influencing patterns of mass media use among adolescents in India (Unpublished) Ph.D. Thesis, University of Pune, India, 1984.
11. Robinson JP. Television impact on everyday life, some Cross National Evidence, In E.A. Rubinstein, 1972.